साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कामिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Earth provides enough to satisfy every man's needs, but not every

वर्ष : 8, अंक : 15 | (प्रति बुधवार), इन्दौर, 30 नवंबर 2022 से 6 दिसंबर 2022 | पेज : 8 | कीमत : 3 रुपये

सातवीं सामूहिक विलुप्ति की ओर बढ़ रही है धरती, हर साल विलुप्त हो रही हैं हजारों प्रजातियां

नई दिल्ली। वर्तमान में पृथ्वी बड़े पैमाने पर विलुप्तियों के दौर से गुजर रही है, हर साल हजारों प्रजातियां गायब हो रही हैं। नए शोध से पता चलता है कि पर्यावरण में बदलाव इतिहास में पहली ऐसी घटना के लिए जिम्मेवार है, जो लाखों साल पहले वैज्ञानिकों ने सोचा था। अधिकांश डायनासोर 6.6 करोड़ वर्ष पहले यानी क्रेटेशियस काल के अंत में गायब हो गए थे। इससे पहले, लगभग 25.2 करोड़ वर्ष पहले, पृथ्वी के अधिकांश जीवों को पर्मियन और ट्रायसिक काल के बीच पाया गया था। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया-रिवरसाइड (यूसीआर) और वर्जीनिया टेक के शोधकर्ताओं के अनुसार, एडियाकरण काल के दौरान 55 करोड़ वर्ष पहले एक समान विलुप्ति हुई थी।

शोधकर्ताओं ने कहा कि यह स्पष्ट नहीं है कि क्या यह एक वास्तविक बड़े पैमाने पर विलुप्त होने के लिए जिम्मेदार है, गायब हुए जीवों का प्रतिशत इन अन्य घटनाओं के समान है, जिसमें वर्तमान में हो रही रही घटना भी शामिल है। शोधकर्ताओं का मानना है कि पर्यावरणीय बदलाव सभी एडियाकरण जीवों के लगभग 80 प्रतिशत के नुकसान के लिए जिम्मेदार हैं, जब धरती पर पहले जटिल, बहुकोशिकीय जीवित जीव थे। यूसीआर में जीवाश्म विज्ञानी और सह-अध्ययनकर्ता चेनी तू ने कहा, भूगर्भीय रिकॉर्ड बताते हैं कि उस समय के दौरान दुनिया के महासागरों से बहुत अधिक ऑक्सीजन का नुकसान हो गया था और जो कुछ प्रजातियां बची थीं, उनका शरीर कम ऑक्सीजन वाले वातावरण के अनुकूल हो गया था। बाद की घटनाओं के विपरीत, यह सबसे पहले का दस्तावेजीकरण करना अधिक कठिन था क्योंकि जो जीव नष्ट हुए थे वे नरम शरीर वाले थे और जीवाश्म रिकॉर्ड में अच्छी तरह से संरक्षित नहीं थे। अध्ययनकर्ताओं ने कहा हमें इस तरह की घटना पर संदेह था, लेकिन इसे साबित करने के लिए हमें सबूतों का एक विशाल डेटाबेस इकट्ठा करना था। इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए, टीम ने लगभग हर ज्ञात एडियाकरण जानवर के पर्यावरण, शरीर के आकार, आहार, चलने-फिरने की क्षमता और आदतों का दस्तावेजीकरण किया। एडियाकरण जीवों को आज के मानकों से अजीब माना जाएगा। बहुत से जानवर हिल-डुल सकते थे, लेकिन वे अब जीवित नहीं थे। उनमें ओबामस कोरोनाटस, एक डिस्क के आकार का प्राणी था जिसका नाम पूर्व राष्ट्रपति के नाम पर रखा गया था और एटेनबोराइट्स जेनी, अंग्रेजी प्रकृतिवादी सर डेविड एटनबरो के नाम पर किशमिश जैसा दिखने वाला एक छोटा अंडाकार जीव था। यूसीआर पैलियो-इकोलॉजिस्ट मैरी ड्रोजर ने कहा ये जानवर पृथ्वी पर पहला विकासवादी प्रयोग थे, लेकिन वे केवल लगभग 1 करोड़ साल तक जिंदा रहे। यूसी रिवरसाइड भूविज्ञानी और सह-अध्ययनकर्ता फिलिप बोआन ने कहा हम पारिस्थितिक तंत्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को देख सकते हैं और भविष्य के लिए योजना बनाते समय विनाशकारी प्रभावों पर ध्यान देना चाहिए। यह शोध प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज में प्रकाशित हुआ है।

छात्रों ने जलवायु परिवर्तन माडल के माध्यम से पर्यावरण को बचाने का दिया संदेश

बिलासपुर भारत माता आंग्ल माध्यम शाला के छात्र-छात्राओं ने जलवायु परिवर्तन को लेकर माडल तैयार किया। इस माडल के माध्यम से बताया गया है कि जलवायु को संतुलित कर पर्यावरण के कैसे बचाया जा सकता है। लगातार जलवायु में हो रहे परिवर्तन को नियंत्रित के उपाय बच्चों ने माडल के माध्यम से बताया। इन दिनों जलवायु परिवर्तन वैश्विक मुद्दा बन गया है। इस विषय पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिकों द्वारा काम किया जा रहा है। भारत माता आंग्ल माध्यम शाला में टिंकर फेस्ट का आयोजन किया गया। विज्ञान और वाणिज्य मेले में छात्र-छात्राओं में एक से बढ़कर एक अपने इनोवेशन को प्रोटोटाइप के माध्यम से प्रस्तुत किया। नीति आयोग व अटल इनोवेशन मिशन द्वारा संचालित अटल टिंकरिंग लैब के बच्चों ने अपनी सहभागिता दी। जलवायु परिवर्तन विषय पर भी विद्यार्थियों ने माडल बनाया। वाणिज्य विषय पर नए विद्याओं व तकनीक पर तैयार 20 प्रोजेक्ट का प्रदर्शन किया। विज्ञान विभाग में सेंसर, मोटर, रिपेलर, आडिनो, यूनो का उपयोग कर 60 प्रोटोटाइप का निर्माण किया। दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग करने पर जोर दिया। डीपी विप्र कालेज के भौतिकी विभाग के डाक्टर विवेक अंबलकर ले छात्रों के विज्ञान माडल की सराहना किया। आगे चलकर विज्ञान के क्षेत्र में नए-नए अविष्कार करने के लिए प्रेरीत किया। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन वैश्विक मुद्दा बन चुका है। इसको लेकर अंतरारष्ट्रीय स्तर के हजारों वैज्ञानिक काम कर रहे हैं। ताकि जलवायु की स्थिति में संतुलन बना रहे। इस कार्यक्रम का उद्घाटन अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा, डीपी विप्र कालेज के भौतिकी विभाग के डाक्टर विवेक अंबलकर, शाला के मैनेजर फादर फ्रांसिस टी, शाला के प्राचार्य फादर शलीन द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में सिल्विया गिरवाल, राजम थामस, नीता गुप्ता, अंशुल गुलकारी, रोमी लूथरा, जी जबीन समेत समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं व स्टाफ उपस्थित रहे।

कैसे हमारे इम्यून सिस्टम को कमजोर कर रहा है, दशकों से पसरा वायु प्रदूषण?

नई दिल्ली। क्या आपने कभी सोचा है कि क्यों उम्र बढ़ने के साथ लोग सांस की बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं? क्यों इसके प्रति उनकी इम्युनिटी कमजोर होती जाती है। आमतौर पर ज्यादातर लोग उम्र दराज लोगों में घटती प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए बढ़ती उम्र को जिम्मेवार मानते हैं, लेकिन इस बारे में किए नए अध्ययन में सामने आया है कि दशकों से वायु प्रदूषण का संपर्क भी इम्यून सिस्टम को कमजोर कर रहा है।

इस बारे में कोलंबिया यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों द्वारा किए नए अध्ययन से पता चला है कि दशकों से पसरा वायु प्रदूषण समय के साथ हमारे इम्यून सिस्टम को कमजोर कर रहा है। इस अध्ययन के निष्कर्ष जर्नल नेचर मेडिसिन में प्रकाशित हुए हैं। जो इस बात का एक नया कारण देता है कि क्यों उम्र बढ़ने के साथ लोग सांस की बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। अध्ययन से पता चला है कि वायु प्रदूषकों के यह महीन कण सांस के जरिए फेफड़ों से जुड़े लिम्फ नोड्स की प्रतिरक्षा कोशिकाओं के अंदर दशकों तक जमा होते रहते हैं। जहां यह महीन कण कोशिकाओं की श्वसन संक्रमण से लड़ने की क्षमता को कमजोर करते रहते हैं। विशेष रूप से बुजुर्ग श्वसन संक्रमण के प्रति संवेदनशील होते हैं। यह तथ्य कोविड-19 महामारी के दौरान भी सामने आया था। जब इस महामारी से मरने वालों में युवाओं की तुलना में 75 वर्ष से अधिक आयु के लोगों का आंकड़ा 80 गुना ज्यादा था। साथ ही बुजुर्गों के इन्फ्लूएंजा और फेफड़ों के अन्य संक्रमणों की चपेट में आने की सम्भावना भी ज्यादा होती है। शुरुआत में कोलंबिया विश्वविद्यालय के शोधकर्ता प्रतिरक्षा प्रणाली पर वायु प्रदूषण के प्रभावों का अध्ययन नहीं कर रहे थे। इस बारे में अध्ययन से जुड़ी प्रमुख शोधकर्ता प्रोफेसर डोना फार्बर ने बताया कि, जब हमने लोगों के लिम्फ नोड्स को देखा, तो हम चकित रह गए, क्योंकि फेफड़ों के लिम्फ नोड्स काले रंग के थे, जबकि जठरांत्र पथ यानी जीआई पथ और शरीर के अन्य हिस्सों में मौजूद नोड्स विशिष्ट तौर पर बेज रंग के थे। इसे समझने के लिए शोधकर्ताओं ने युवाओं से लिए टिश्यूं को एकत्र किया, जिसमें उन्हें फेफड़ों के लिम्फ नोडस में उम्र का अंतर स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता था। उन्हें पता चला कि बच्चों और किशोरों में फेफड़ों के लिम्फ नोडस बेज रंग के थे, जबकि 30 वर्ष से ज्यादा उम्र के लोगों से लिए नमूनों में लिम्फ नोडस हलके काले थे जो उम्र बढ़ने के साथ और काले होते गए थे। फार्बर ने बताया कि जब उन्होंने इन काले लिम्फ नोडस का अध्ययन किया तो पता चला कि यह नोडस वायु प्रदूषकों के कणों से भरे हुए थे। उन्होंने पाया कि फेफड़े के लिम्फ नोड्स में मिले प्रदूषक के कण मैक्रोफेज, प्रतिरक्षा कोशिकाओं के अंदर स्थित थे। गौरतलब है कि यह प्रतिरक्षा कोशिकाएं शरीर में बैक्टीरिया, वायरस, सेलुलर वेस्ट और अन्य संभावित खतरनाक पदार्थों को नष्ट कर देती हैं। रिसर्च से पता चला कि यह कण युक्त मैक्रोफेज कोशिकाएं विशेष रूप से विकृत थी। वो अन्य कणों को अपने में समाने और साइटोकिन्स सिग्नल को भेजने में बहुत कम सक्षम थी। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि साइटोकिन्स सिग्नल एक तरह से इन प्रतिरक्षा कोशिकाओं द्वारा भेजे जाने वाले 'सहायता' के संकेत होते हैं, जो प्रतिरक्षा प्रणाली के अन्य भागों को सक्रिय करते हैं। वहीं दूसरी तरफ जिन लिम्फ नोड्स में प्रदूषण के कण नहीं थे, उनमें मैक्रोफेज अप्रभावित थे। इस बारे में प्रोफेसर फार्बर का कहना है कि यह प्रतिरक्षा कोशिकाएं, प्रदूषण के कणों से अवरुद्ध हो जाती हैं, जिसके चलते वो जरूरी काम नहीं कर पाती हैं। जो रोगजनकों के खिलाफ हमारी रक्षा में मदद करते हैं। उनका कहना है कि, हालांकि अब तक हम पूरी तरह यह नहीं जानते कि प्रदूषण, फेफड़ों की प्रतिरक्षा प्रणाली को कितना प्रभावित करता है। लेकिन निस्संदेह इतना स्पष्ट है कि यह बुजुर्ग लोगों में कहीं ज्यादा खतरनाक श्वसन संक्रमण पैदा करने में मददगार होता है। ऐसे में वायु प्रदूषण की रोकथाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि भारत की बात करें तो देश में वायु प्रदूषण की समस्या गंभीर रूप ले चुकी है। इस बढ़ते प्रदूषण का सीधा असर लोगों के स्वास्थ्य परपड़रहा है। यदि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) द्वारा जारी वायुगुणवत्ता मानकों को देखें तो पूरा देश यानी 130 करोड़ भारतीय आज ऐसी हवा में सांस ले रहे हैं जो हर पल उन्हें बीमार बना रही है। देश में यह समस्या कितनी बड़ी है इसका अंदाजा एनर्जी पालिसी इंस्टिट्यूट (ईपीआईसी) द्वारा जारी हालिया रिपोर्ट के नतीजों से लगा सकते हैं जिनके अनुसार बढ़ता प्रदूषण हर दिल्लीवासी से उसके जीवन के औसतन 10.1 साल लील रहा है, जबकि बढ़ते प्रदूषण के चलते लखनऊ वालों की औसत आयु 9.5 साल तक घट सकती है। वहीं यदि एक औसत भारतीय की जीवन सम्भावना की बात करें तो बढ़ता प्रदूषण उसमें औसतन पांच साल तक कम कर रहा है। मतलब यह कुपोषण और धूम्रपान से भी कहीं ज्यादा खतरनाक है।

पर्यावरण शुद्धि का साधन अग्निहोत्र होता है

सोडलपुर अग्निहोत्र प्रचारक अमृतलाल चौहान, राम सोलंकी के द्वारा गांवों में जाकर ग्रामीणों को अग्निहोत्र के बारे में और पर्यावरण शुद्धि की जानकारी देने का कार्य कर रहे है। मंगलवार शाम को गुरु कान्हा बाबा समाधि स्थल पर अग्निहोत्र हवन महामृत्युंजय का जाप किया गया। इस दौरान मंदिर में उपस्थित लखनलाल राय खेरें, राधेश्याम सोलंकी, राधेश्याम चौधरी सहित अन्य ग्रामीणों ने आहुतियां डाली। आहुतियों के बाद अमृत लाल चौहान ने बताया कि अचानक कोई आपदा आने पर हम महामृत्युंजय यज्ञ करके हमारे परिवार की रक्षा कर सकते हैं। महामृत्युंजय का समय निश्चित नहीं है, इसे आधा घंटे, 15 मिनट भी कर सकते हैं। अग्निहोत्र का कोई विकल्प नहीं है। यह ठीक सूर्योदय और सूर्यास्त पर वैदिक मंत्रों द्वारा गाय के घी और चावल की दो आहुतियां बनाकर दी जा सकती है। जिसका प्रभाव लगभग 12 घंटे बना रहता है। आज का पर्यावरण दूषित हो रहा है। हर परिवार को अग्निहोत्र घर में करना चाहिए। जिससे पर्यावरण शुद्ध हो । अग्निहोत्र हवन से घर में सुख शांति भी आती है । इस महामृत्युंजय के जाप से सभी पापों का नाश और आपदा में रक्षा करने की शक्ति होती है।

डीएम बोले, पर्यावरण के लिए नासूर है Single Use Plastic, कचरे की शवयात्रा को दिखाई हरी झंडी

अलीगढ़, डीएम इन्द्र विक्रम सिंह द्वारा कलक्ट्रेट परिसर से स्वच्छ भारत मिशन फेस दो के तहत प्लास्टिक मुक्त पंचायत अभियान के दौरान एकत्रित सिंगल यूज प्लास्टिक कचरा की शवयात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। जनपद में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अन्तर्गत जनजागरूता अभियान आजादी के 75वें वर्ष में 15 अगस्त 2022 को शुरू किया गया। अभियान के तहत प्रत्येक ग्राम में प्लास्टिक बैंक बनाकर प्लास्टिक कचरे को अलग से एकत्रित किया गया।

जन जागरूकता अभियान की सफलता के लिये गॉव-गॉव में रैलियां निकाली गयीं और घर-घर से प्लास्टिक कचरे को विशेष वाहन से इकट्ठा किया गया। अभियान के तहत मंगलवार को 867 गॉव से 8 टन से अधिक प्लास्टिक कचरे को एटूजेड संस्था को रिसाइकल करने के लिये सौंपा गया है। प्लास्टिक का उपयोग न केवल गैर कानूनी है बल्कि पर्यावरण को बहुत ज्यादा क्षति पहुँचाने वाला भी है। हमारी कोशिश यही है कि अब ग्राम स्तर पर भी लोग प्लास्टिक का इस्तेमाल न करें, यह तभी संभव है कि जब लोग जागरूक हों और सामाजिक रूप से प्लास्टिक उपयोग के प्रति अस्वीकार्यता बढ़ जाए। उन्होंने जनसामान्य से अपील करते हुए कहा कि यदि कोई व्यक्ति प्लास्टिक का इस्तेमाल करता दिखे, तो उसके प्रति उपेक्षा दिखाएं ताकि वह प्लास्टिक उपयोग न करे। उन्होंने अभियान के सफल संचालन के लिये डीपीआरओ एवं उनकी टीम को बधाई देते कहा कि प्लास्टिक एकत्र करना अलग बात है और उसको सही तरीके से रिसाइकल कराना अलग बात है। डीएम इंद्र विक्रम सिंह ने कहा कि भविष्य में इस तरह का कचरा एकत्रित न हो इसके लिये शहरी और ग्रामीण जन इसके सहयोग करें। उन्हें पूरा विश्वास है कि उन्हें जनपदवासियों का इसमें सहयोग मिलेगा और धीरे-धीरे सिंगल प्लास्टिक उपयोग पूर्णत: बन्द हो जाएगा। डीएम ने कहा कि प्लास्टिक व पॉलीथिन पर प्रतिबंध के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी घोषणा कर चुके हैं, अब इसे महा अभियान बनाने की जरूरत है। इस महा अभियान में जरूरत है, जनमानस के सहयोग की। उन्होंने जनमानस से अपील करते हुए कहा कि बाजार में कुछ सामानों की खरीदी करने के लिए प्लास्टिक बैग के बजाय कपड़े का या जुट का थैला का इस्तेमाल करें।

शादियों या विभिन्न पार्टी में प्लास्टिक के बर्तनों का इस्तेमाल करने के बजाए कागज या स्टील के बर्तन का इस्तेमाल कर सकते हैं। बोतलबंद पानी का उपयोग कम करें, बाहर से खाना मंगायें तो प्लास्टिक के डिस्पोजल का उपयोग कम करें। प्लास्टिक संग्रहण केन्द्र पर ही प्लास्टिक कचरा दें। डीएम ने इन्द्र विक्रम सिंह ने कहा की दशकों पहले लोगों की सुविधा के लिये प्लास्टिक का आविष्कार किया गया था। लेकिन धीरे-धीरे यह अब पर्यावरण के लिये ही नासूर बन गया है। जिसकी वजह यह है कि प्लास्टिक का विघटन बिल्कुल भी नहीं होता। एक पॉलिथीन वर्षों तक जमीन में धंसी रहने के बावजूद भी वह उसी अवस्था में रहती है। प्लास्टिक और पॉलीथीन के कारण पृथ्वी और जल के साथ-साथ वायु भी प्रदूषित होती जा रही है। पहले तो यह ढ़ेर धरती तक ही सीमित था। अब यह नदियों से लेकर समुद्र तक हर जगह नज़र आने लगा है। धरती पर रहने वाले जीव-जंतुओं से लेकर समुद्री जीव भी हर दिन प्लास्टिक निगलने को विवश है। इसके कारण प्रत्येक वर्ष तकरीबन 1 लाख से अधिक जलीय जीवों की मृत्यु होती है।

प्रभारी जिला पंचायतीराज अधिकारी धनंजय जायसवाल ने बताया अभियान का मुख्य उद्देश्य सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बन्द करने के लिए जागरुकता पैदा करना है। उन्होंने बताया कि सफाई कार्मिकों ने तैनाती क्षेत्र में कूड़े के रुप में पड़े हुए सिंगल यूज प्लास्टिक पॉलीथीन, बोतल, डिब्बे को एकत्रित कर सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त करते हुए न्याय पंचायत स्तर पर चिन्हित प्लास्टिक संग्रहण केन्द्र पर एकत्रित किया गया था।

रस्म अदायगी बन गई है वायु प्रदूषण से निपटने की कवायद

नई दिल्ली। प्रति वर्ष 20 अक्टूबर के आसपास दिल्ली महानगर को एक झटका लगता है और चेतावनियों का दौर शुरू हो जाता है। यह वह समय है जब वायु प्रदूषण अपने उच्चतम स्तर पर होता है और इसके साथ ही एक-दूसरे को जिम्मेदार बताने और आरोप-प्रत्यारोप की होड़ शुरू हो जाती है। प्रदूषण के कारण हमारा दम घुटता है और हम चीख पुकार मचाते हैं। टीवी चैनलों पर बहस शुरू हो जाती है और टीवी एंकर जवाब-तलब करते हैं। वहीं ऐसे समय में राजनेता अपनी जिम्मेदारी से भागने के रास्ते खोज करते नजर आते हैं। बीते कुछ वर्षों से इस तरह के मामलों में दो तरह के कदम (अगर हम उन्हें कदम कह सकें) उठाए जाते हैं। पहला, दिल्ली सरकार ने एक के बाद एक अध्ययन कराए ताकि प्रदूषण की असली वजह का पता लगाया जा सके और जरूरी कदम उठाए जा सकें। दूसरा, उसने इस बात पर जोर दिया कि शहर में प्रदूषण के बाहरी कारक भी हैं यानी दूसरी सरकारें इसके लिए जिम्मेदार हैं। जाहिर है वे दूसरी सरकारें तत्काल इस मामले में इनकार कर देती हैं और इस प्रकार यह चक्र चलता रहता है। हकीकत यह है कि हमें प्रदूषण के स्रोत के बारे में पूरी जानकारी है, भले ही हर क्षेत्र का इसमें योगदान अलग-अलग मौसम में घटता-बढ़ता रहता है। वह है वाहनों, कारखानों, डीजल जेनरेटरों, बिजली संयंत्रों और घरों से उत्पन्न होने वाला उत्सर्जन, सड़क की धूल, भवन निर्माण आदि से होने वाला प्रदूषण आदि। यह याद रहे कि धूल प्रदूषक नहीं है बल्कि यह जहर है क्योंकि इसमें वाहनों तथा अन्य प्रकार के दहन से उत्पन्न विषाक्त कण चिपके रहते हैं। ऐसे में हर जाड़े में सबसे पहला प्रश्न यह पूछा जाना चाहिए बल्कि जाड़ों की शुरुआत के पहले हर महीने यह पूछा जाना चाहिए कि इस दहन से संबंधित उत्सर्जन को रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं और क्या कदम उठाने आवश्यक हैं।

दूसरी बात, इसमें दो राय नहीं है कि जब किसान अपने खेतों को अगले मौसम की बुआई के लिए साफ करते हैं तो वे फसल अवशेषों में जो आग लगाते हैं, वह हवा के बहाव के साथ प्रदूषक तत्त्वों को दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में भी लाते हैं। अगर यह तब होता है जब मौसम प्रतिकूल हो तो प्रदूषण का स्तर बढ़ता है और हवा अत्यधिक घातक हो जाती है। इस समय भी दिल्ली में सांस लेना मुश्किल हो चुका है। इसके बाद बात आती है उन उद्योगों की जिन्हें दिल्ली से बाहर स्थानांतरित कर दिया गया था लेकिन जो अभी भी कोयले अथवा खराब माने जाने वाले ईंधन का इस्तेमाल कर रहे हैं। ये उद्योग अब दिल्ली के पड़ोसी राज्यों में स्थापित हैं और इनके कारण भी प्रदूषण में इजाफा हो रहा है। लब्बोलुआब यह कि वायु प्रदूषण की कोई सीमा नहीं जानता है, इसलिए एक-दूसरे पर अंगुली उठाने की कोशिशों से कोई सार्थक प्रगति होती नहीं दिखती है। सच तो यह है कि दिल्ली भी प्रदूषण की समस्या का हिस्सा है। दिल्ली में वाहनों तथा अन्य तरह से होने वाला प्रदूषण पड़ोसी राज्यों के प्रदूषक तत्त्वों से मिलता है। मैं यह आलेख इस उम्मीद के साथ लिख रही हूं कि हम निरर्थक बहसों को किनारे कर सकेंगे और उन बातों पर ध्यान केंद्रित कर सकेंगे जो वास्तव में मायने रखती हैं यानी प्रदूषण के हर स्रोत के खिलाफ कड़े कदम उठाना। ऐसे में लाजिमी तौर पर यह बात भी सामने आएगी कि उद्योगों और बिजली संयंत्रों में कोयले का इस्तेमाल बतौर ईंधन किया जाता है। दिल्ली ने अपना अंतिम कोयला आधारित बिजली संयंत्र भी बंद कर दिया है लेकिन जैसा कि मैंने कहा वायु प्रदूषण ऐसी किसी सीमा को नहीं मानता। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में मौजूद अन्य ताप बिजली घर लगातार कोयले का इस्तेमाल कर रहे हैं और प्रदूषण फैला रहे हैं। उन्होंने अपनी उत्सर्जन तकनीक में भी कोई सुधार नहीं किया है।

फूलों की घाटी को चर रही है घास और बदलता मौसम

शिमला। हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड को कुदरत ने अनेक खूबसूरत तोहफों से नवाजा है। ऐसा ही एक तोहफा है फूलों की घाटी। यह घाटी उन लोगों के लिए जन्नत से कम नहीं जो फूलों में दिलचस्पी रखते हैं। यहां पाया जाने वाला हर फूल विशिष्ट है। अधिकांश फूलों का आयुर्वेद और चिकित्सा पद्धति में विशेष महत्व है। चमोली जिले में नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान में स्थित यह घाटी समुद्र तल से करीब 12,500 फीट की ऊंचाई पर है और लगभग 88 वर्ग किलोमीटर में फैली है। ब्रिटिश पर्वतारोही फ्रेंक स्मिथ 1931 में जब इस घाटी से गुजरे तो यहां फूलों की विविधता देखकर हैरान रह गए थे। 1939 में आई उनकी किताब वैली ऑफ फ्लावर्स के बाद इसी नाम से घाटी लोकप्रिय हो गई। हालांकि स्थानीय लोग इसे भ्यूंडार घाटी कहते हैं। 1982 में इस घाटी को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला और 2005 में यूनेस्को की विश्व धरोहर में इसे शामिल किया गया। स्थानीय लोग मानते हैं कि वर्तमान में फूलों की घाटी काफी बदलावों से गुजर रही है। राष्ट्रीय उद्यान घोषित होने के बाद प्रशासन ने घाटी में मवेशियों और भेड़-बकरियां चराने पर रोक लगा दी। इसके बाद घाटी, घास की आक्रामक प्रजाति पॉलिगोनम पॉलिस्टीच्यूम की जद में आई जो अब बड़े हिस्से में फैल चुकी है। भ्यूंडार गांव के निवासी पुराने दिनों को याद करते हुए बताते हैं कि मई के महीने में वे बकरियां और गाय चराने जाते थे और एक महीने से भी कम समय में आगे और ऊंचे मैदानों की तरफ बढ़ जाते थे। जानवरों के खुरों से निराई गुड़ाई का काम हो जाता था और गोबर से वहां उगने वाले फूलों और जड़ी-बूटियों को खाद मिल जाता था। इससे जुलाई-अगस्त में अच्छे फूल खिलते थे। लेकिन चराई पर रोक लगने से स्थितियां बदल गईं। मौसमी बदलावों ने भी घाटी को प्रभावित किया। मसलन, इसी साल बर्फ जल्दी पिघलने से समय से दो सप्ताह पहले यानी मई के मध्य में फूल खिलने लगे। डाउन टू अर्थ के फोटो पत्रकार विकास चौधरी ने घाटी में आ रहे बदलावों और फूलों की विविधता को तस्वीरों में कैद किया फूलों की घाटी में पेड़-पौधों की करीब 520 प्रजातियां हैं। इनमें भी सर्वाधिक 498 प्रजातियां फूलों की हैं। घाटी में मिलने वाले 112 फूलों के पौधे औषधीय गुणों वाले हैं। फूलों के अलावा यहां एशियाई काला भालू, हिमालयन थार, हिरण, हिम तेंदुआ जैसी विलुप्तप्राय जानवरों की प्रजातियां भी मिलती हैं फूलों की घाटी में पेड़-पौधों की करीब 520 प्रजातियां हैं। इनमें भी सर्वाधिक 498 प्रजातियां फूलों की हैं। घाटी में मिलने वाले 112 फूलों के पौधे औषधीय गुणों वाले हैं। फूलों के अलावा यहां एशियाई काला भालू, हिमालयन थार, हिरण, हिम तेंदुआ जैसी विलुप्तप्राय जानवरों की प्रजातियां भी मिलती हैं यह फूल हिमालय में 3,300 से 4,500 मीटर की ऊंचाई पर पाया जाता है। फूलों की घाटी इसके लिए एकदम मुफीद है। इस फूल का सामान्य नाम ट्रेलिंग बेलफ्लावर है।

मानकों के अनुसार खनन और पर्यावरण संरक्षण के लिए करें पौधरोपण

बागेश्वर। डीएम अनुराधा पाल ने अल्मोड़ा मैग्नेसाइट फैक्टरी का निरीक्षण कर मानकों के अनुसार खनन करने और पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिकाधिक पौधरोपण कराने और डंपिंग स्थान पर अस्थाई हेलीपैड बनाने के निर्देश दिए।

डीएम/फैक्टरी निदेशक पाल ने खनन क्षेत्र, डंपिंग स्थान और वनीकरण का निरीक्षण किया। फैक्टरी के प्रबंध निदेशक योगेश शर्मा ने चालू वित्तीय वर्ष की प्रगति रिपोर्ट पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि फैक्टरी के 165 हेक्टेयर भूमि पर मैग्नेसाइट खनन का कार्य किया जाता हैं जो पूर्णतः वैज्ञानिक तरीके से होता है। फैक्टरी में 359 कुशल और अकुशल श्रमिक कार्यरत हैं जिनमें 228 जनपद बागेश्वर के कर्मचारी हैं। खनन क्षेत्र के ग्रामीणों को रोजगार से जोड़ा जाता है। सीएसआर फंड के माध्यम से भी क्षेत्र व जनपद में स्वास्थ्य और शिक्षा पर कार्य किए जाते हैं। कंपनी मैग्नेसाइट के साथ ही साथ ही स्टोन क्रशर, सोप स्टोन में भी कार्य कर रही हैं। चिडंग में सोप स्टोन का खनन कार्य किया जा रहा है और एक खनन पट्टा स्वीकृति के लिए भेजा गया है। वेस्ट सामग्री में वैल्यू एडीशन करने के लिए सीमेंट, कंक्रीट ईट/इंटरलॉकिंग टाइल्स, पेवर ब्लॉक बनाने का कार्य भी किया जा रहा है। डीएम ने वेस्ट सामग्री में वैल्यू एडीशन करने के लिए सीमेंट, कंक्रीट ईट/इंटरलॉकिंग टाइल्स,/पेवर ब्लॉक बनाने की गुणवत्ता में और सुधार लाने के निर्देश दिए। उन्होंने श्रमिकों की समस्याएं भी सुनीं। इस मौके पर महाप्रबंधक ललित कांडपाल, खनन प्रबंधक धर्मेंद्र बंसल, जियोलॉजिस्ट, जितेंद्र रावत, कंपनी सचिव यश, प्लांट हेड अर्जुन भाकुनी, प्रभात डसीला, क्रांति जोशी, दिनेश भट्ट आदि मौजूद रहे।

पर्यावरण-सर्कुलर-इकानामी विषय पर हुई बैठकों में आए सुझावों का अध्ययन करेगा हरियाणा

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने पर्यावरण-सर्कुलर इकोनॉमी के लिए अब तक हो चुकी राउंड टेबल बैठकों में अधिकारियों और विशेषज्ञों के दिए सुझावों के अध्ययन के आदेश दिए हैं और तीन दिनों में विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। इसके साथ ही सर्कुलर इकोनॉमी के तहत ठोस व तरल अपशिष्ट प्रबंधन पर जोर देने के लिए कहा है। यह जानकारी हरियाणा के मुख्य सचिव संजीव कौशल ने दी।

वह यहां वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जल शक्ति मंत्रालय की सचिव विनी महाजन की अध्यक्षता में पर्यावरण-सर्कुलर इकोनॉमी से संबंधित रणनीतियों व कार्य योजनाओं पर विचार-विमर्श के लिए हुई राउंड-टेबल बैठक में बोल रहे थे। बैठक में विभिन्न राज्यों के मुख्य सचिव और देशभर से कुछ नगर निगमों के आयुक्तों ने भी हिस्सा लिया। मुख्य सचिव ने कहा कि उन्होंने शहरी स्थानीय निकाय विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि यमुनानगर शहर में पायलट प्रोजेक्ट के तहत ठोस व तरल कचरे को घरों से ही अलग-अलग एकत्र करने के कार्य को सख्ती से लागू किया जाए। इंदौर में नगर निगम द्वारा डोर-टू-डोर कचरा एकत्रित करने के कार्य, उसका निष्पादन और वाणिज्यिक गतिविधियों का अध्ययन किया जाए। इसके अलावा, गुरुग्राम में चल रहे सी एंड डी वेस्ट प्रबंधन प्लांट द्वारा की जा रही गतिविधियों व उसके परिणामों की साइंटिफिक स्टडी भी की जाए। मुख्य सचिव ने सुझाव दिया कि वर्तमान में केंद्र और राज्य स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के तहत की जाने वाली विभिन्न गतिविधियां अलग-अलग विभागों जैसे शहरी स्थानीय निकाय, विकास एवं पंचायत, नव एवं नवीकरणीय ऊर्जा, कृषि एवं किसान कल्याण इत्यादि विभागों द्वारा की जाती हैं। यदि पर्यावरण-सर्कुलर इकोनॉमी की दिशा में आगे बढ़ना है, तो सबसे पहले इन सभी गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए या तो एक विभाग या एक विशेष सेल स्थापित करना होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादकः डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008